A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

# नारदीय कीर्तन तथा वारकरी कीर्तन का तुलनात्मक अध्ययन

**Dr. Anaya Thatte**
Department of Music, University of Mumbai, Mumbai

OPEN ACCESS

**सारांश**

*इस शोध पत्र में महाराष्ट्र की दो प्रमुख कीर्तन परंपराओं नारदीय कीर्तन और वारकरी कीर्तन का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। कीर्तन, जोकि भारतीय भक्ति आंदोलन का एक अभिन्न अंग है, केवल संगीत और कथा-वाचन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह अध्यात्मिक संदेश और सामाजिक समरसता का माध्यम भी है। नारदीय कीर्तन वेद, उपनिषद और पुराण जैसे प्राचीन ग्रंथों पर आधारित है। इसका मुख्य उद्देश्य धार्मिक शिक्षा देना और भारतीय शास्त्रीय परंपराओं को प्रोत्साहित करना है। यह विशेष रूप से ब्राह्मण समाज द्वारा किया जाता था और इसकी प्रस्तुति विशिष्ट धार्मिक स्थलों तक सीमित रहती थी। वहीं, वारकरी कीर्तन का उद्देश्य भगवान विट्ठल की भक्ति का प्रचार-प्रसार और सामाजिक सुधार है। यह सरल भाषा, लोकगीतों और समावेशी दृष्टिकोण पर आधारित है, जिससे यह सभी वर्गों में लोकप्रिय है। दोनों परंपराओं के उद्देश्यों में स्पष्ट भिन्नता होते हुए भी, वे महाराष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने में समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।*

***संकेत शब्द:*** *नारदीय कीर्तन, वारकरी कीर्तन, भक्ति आंदोलन, धार्मिक संगीत, सांस्कृतिक धरोहर*

## प्रस्तावना

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के दौरान विभिन्न कीर्तन परंपराओं का उद्भव एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और धार्मिक घटना थी। यह आंदोलन 15वीं से 17वीं शताब्दी के बीच भारतीय समाज में व्यापक धार्मिक और सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक था। भक्ति आंदोलन ने भगवान की भक्ति को सरल, सुलभ और व्यक्तिगत रूप से जोड़ा। भक्ति आंदोलन ने भारतीय कला और संस्कृति पर एक अमिट छाप छोड़ी। भक्ति की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति पर उनके ध्यान ने भक्ति साहित्य का एक विशाल निकाय बनाने में मदद की, जिसमें क्षेत्रीय भाषाओं में कविताएँ, भजन और गीत शामिल थे। भाषा के इस लोकतंत्रीकरण ने भारतीय साहित्य को समृद्ध करते हुए आध्यात्मिक शिक्षाओं को सुलभ बनाया। भक्ति कुछ शास्त्रीय और लोक संगीत परंपराओं पर भी हावी थी, जिसके कारण भजन, कीर्तन और अभंग जैसे संगीत के भक्ति रूपों का निर्माण हुआ। संगीत के रूप धार्मिक प्रथाओं और सांस्कृतिक त्योहारों का हिस्सा बन गए। मंदिर पूजा और तीर्थयात्रा के आकर्षण ने आंदोलन में वास्तुकला शैलियों और धार्मिक कला को प्रेरित किया। संगीत भक्ति परंपराओं में सामुदायिक भावना निर्माण करने हेतु एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करता है। चाहे कीर्तन सभाओं के माध्यम से हो या भक्ति गायन वाले स्थानीय त्योहारों के माध्यम से, सांप्रदायिक संगीत-निर्माण प्रतिभागियों के बीच सामाजिक बंधन को बढ़ावा देता है। यह अनुभव जाति या सामाजिक-आर्थिक स्थिति जैसे व्यक्तिगत मतभेदों से परे होता है। भारत की भक्ति परंपरा में संगीत और कीर्तन का महत्वपूर्ण स्थान है।

## कीर्तन की उत्पत्ति और विकास

भक्ति आंदोलनों की एक महत्वपूर्ण विशेषता विभिन्न संप्रदायों की अभिव्यक्ति है, जिनमें से प्रत्येक की अपनी अनूठी धार्मिक प्रथाएं और दर्शन हैं। इन संप्रदायों का एक पहलू कीर्तन या गीत, नृत्य और कहानी कहने के माध्यम से भक्ति की व्यक्तिगत और सामूहिक अभिव्यक्तियों का अभ्यास था। भारतीय इतिहास में भक्ति और सामाजिक सद्भाव की एक स्थायी विरासत बनाने के लिए कीर्तन एक एकीकृत शक्ति बन गई जिसने क्षेत्रीय और सांस्कृतिक सीमाओं को पार किया। महाराष्ट्र की कीर्तन परंपरा भारतीय भक्ति आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो विशेष रूप से महाराष्ट्र में विकसित हुआ। यह परंपरा विठोबा (विट्ठल) की भक्ति से जुड़ी हुई है। मराठी कीर्तन का मुख्य उद्देश्य भगवान की महिमा गाना और भक्तों को आध्यात्मिक उन्नति की ओर प्रेरित करना है। यह एक शक्तिशाली माध्यम है जिसके माध्यम से समाज एकता, शांति और भक्ति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित होता है।

## कीर्तन के प्रकार

महाराष्ट्र में मुख्य रूप से दो प्रकार के कीर्तन होते हैं। नारदीय कीर्तन और वारकरी कीर्तन दोनों ही आध्यात्मिक जागरूकता और सामाजिक समरसता के वाहक हैं। हालांकि, इनकी उत्पत्ति, संरचना और प्रस्तुति में विभिन्न विशेषताएं हैं जो इन्हें अद्वितीय बनाती हैं।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

1. **नारदीय या हरिदासी कीर्तन**

देवर्षी नारद इस कीर्तन परंपरा के प्रवर्तक हैं जो आज तक महाराष्ट्र में प्रचलित है। पहले नारदिय कीर्तन केवल मंदिरों में ही किया जाता था, लेकिन अब बदलते समय के साथ इसका प्रदर्शन सभागारों में या खुले मैदान में भी किया जाता है। नारदिय कीर्तन कलाकार पुराणों में उल्लेखित अन्य देवी-देवताओं की कहानियों के साथ-साथ विट्ठल की प्रशंसा में कहानियाँ सुनाते हैं। नारदीय कीर्तन में भी आह्वान (नमन) के पहले भाग (पूर्व रंग) और बाद के भाग (उत्तर रंग) वारकरी कीर्तन के समान ही हैं। पुराने दिनों में, केवल ब्राह्मण पुरुष और महिला ही नारदिय कीर्तन कर सकते थे, लेकिन अब इस प्रतिबंध का पालन नहीं किया जाता है। पहला भाग (पूर्व रंग) एक लोकप्रिय गीत से शुरू होता है और दूसरे भाग (उत्तर रंग) में किसी पौराणिक विषय या अन्य कहानी पर भाष्य किया जाता है। दर्शक इस कीर्तन के गाने में भाग नहीं लेते हैं क्योंकि नारदिय कीर्तनकार संगीत के अच्छे जानकार होते है, और अपनी प्रस्तुति में विविध अलंकरणोंका उपयोग कर कीर्तन प्रस्तुति को अधिक रंजक बनाते है।

आम तौर पर नारदीय या हरिदासी कीर्तन में पहला भाग (पूर्व रंग) और दूसरा भाग (उत्तर रंग) में अनुक्रम में आह्वान (नमन) होता है। केवल अंतरे और गीत परंपरा के प्रकार के अनुसार बदलते हैं। नमन कार्य सिद्धि करने में सफलता के लिए देवताओं का एक आह्वान है, जो ईश स्तवन पूजन के साथ अन्य रूपों में किया जाता है। इसलिए नमन कीर्तन का एक आवश्यक हिस्सा है। हर परंपरा में नमन के गीत तथा उनके राग, ताल निश्चित होते हैं। परंपरा के अनुशासन को इस तरह से देखा जाता है। जहां कीर्तन किया जाता है वहां कुछ पारंपरिक श्लोकोंको गणपति, सरस्वती, कुल देवता, विष्णु, कृष्ण या पांडुरंग, अदि देवताओंकी स्तुति में गाया जाता है। एकादशी, रामदासी और राष्ट्रीय कीर्तन प्रकार, जो हरिदासी कीर्तन परंपरा के अंतर्गत आते हैं, थोड़े अंतर के साथ एक ही अनुशासन का पालन करते हैं। नमन 15-20 मिनट के लिए किया जाता है। यदि कीर्तनकार संगीत में अच्छी तरह से पारंगत है, तो कीर्तन के लिए लिए गए कुल समय के आधार पर आधे घंटे के लिए नमन किया जा सकता है, लेकिन उससे अधिक नहीं। नमन दर्शकों को कीर्तन की सफलता के बारे में संकेत देता है।

नमन के बाद, पहला भाग (पूर्व रंग) कीर्तन का मुख्य भाग है, जिसमें लगभग एक घंटा लगता है। इस भाग में कीर्तनकार की संगीत क्षमता दिखाई देती है। कीर्तन के मुख्य विषय का वर्णन इस भाग में किया गया है। कीर्तनकार द्वारा अपनी क्षमता, दर्शकों की पसंद, जिस अवसर के लिए कीर्तन की व्यवस्था की जाती है, आदि को ध्यान में रखते हुए विषय का चयन करता है। पहले भाग (पूर्व रंग) का वर्णन करते हुए कीर्तनकार संतों के कुछ वचनोंका उद्धरण देते हैं, कुछ सिद्धांत बताते हैं और कहानियों के रूप में उदाहरण देते हैं, जिसमें हास्य और संगीत का मिश्रण होता है। देवता (नाम घोष) के नाम को दोहराकर कीर्तनकार अपने प्रदर्शन में दर्शकों की भागीदारी का आह्वान करता है। यह एक पुनर्निर्माण और शैक्षिक प्रयास है और इस विषय में कलाकार के ज्ञान की गहराई और उनकी स्मृति का परीक्षण यहां किया जाता है। इसलिए यह बेहतर है कि शुरुआत में दर्शकों को प्रभावित करने के लिए इस पहले भाग को विषयों, गीतों आदि के क्रम में ठीक से योजनाबद्ध किया जाए।

इस पहले भाग (पूर्व रंग) के बाद भगवान के नाम का बार-बार पाठ किया जाता है और दर्शकों में से काई भक्ति गीत (भक्ति गीत) गाना चाहे, तो उन्हें आमंत्रित किया जाता है जिससे कीर्तनकार को कुछ समय के लिए आराम भी मिलता है, और श्रोताओं को कीर्तन में प्रत्यक्ष रूप में सहभागी होने का आनंद प्राप्त होता है। बाद के भाग (उत्तर रंग) में कीर्तनकार किसी प्राचीन कवि या संत के साहित्य से एक अख्यान लेकर साकी, दिंडी, आर्या, लावणी, कटाव आदि की सहायता से इस बाद के हिस्से को आकर्षक बनाने का प्रयास करता है। पूर्व रंग को उत्तर रंग से जोड़ने के लिए कुछ घटनाओं का अख्यान के रूप में उपयोग किया गया है। आख्यान का विषय अधिक गंभीरतापूर्वक चुनकर उसकी प्रस्तुति की योजना बनानी आवश्यक होती है। इसलिए एक बहुत बड़ा विषय लेने के बजाय, एक छोटा लेकिन आकर्षक विषय चुनना और विभिन्न भावनाओं को पैदा करने के लिए उसमे विभिन्न पात्रों, घटनाओं और स्थान विवरणों को जोड़ना बेहतर समझा जाता है। संगीत, वक्तृत्व और अभिनय इस प्रदर्शन को रंगीन बनाते हैं। कीर्तनकार विभिन्न घटनाओं के लिए उपयुक्त काव्य संदर्भों का भी उपयोग कर सकता है। कभी-कभी कीर्तन का विषय कीर्तन में भाग लेने वाले लोगोंद्वारा तय किया जाता है। भक्ति गीतोंके बीच-बीच में देवी-देवताओं के नाम दोहराए जाते हैं। कीर्तन का उत्तर रंग आरती के साथ समाप्त होता है।

2. **वारकरी कीर्तन**

आषाढ़ी एकादशी के दिन पंढरपूर जाने की परंपरा लंबे समय से चली आ रही है। यह दिन-ब-दिन लोकप्रिय होता गया, जिसे वारी कहा जाता था। इसलिए इन वारी करनेवाले भक्तोंको वारकरी कहा जाता था और यह परंपरा वारकरी संप्रदाय के रूप में लोकप्रिय हो गई। यह भक्ति का तरीका मूल

रूप से वैष्णव संप्रदाय है। इसमें मराठी को अपनी मातृभाषा मानने वाले सभी वर्गों के लोग शामिल हैं। यहां तक कि जिन महिलाओं और शूद्रों को वैदिक परंपरा में आहुति देने का अधिकार नहीं दिया जाता था, वे भी इस परंपरा में शामिल हैं। इसलिए यह एक बहुत लोकप्रिय परंपरा है।

संत ज्ञानेश्वर, एकनाथ, नामदेव, गोराकुंभार, सेनान्हावी, रोहिदास, चोखामेळा, सावतामाळी, तुकाराम, निळोबा और अन्य संतों द्वारा लिखे गए भक्ति गीत (अभंग) वारकरी कीर्तन में गाए जाते हैं। संत नामदेव इस वारकरी कीर्तन परंपरा के प्रवर्तक हैं। यह कीर्तन सभी जातियों के पुरुषों द्वारा किया जाता है। दर्शक कुछ हद तक वारकरी कीर्तन में कीर्तनकार के साथ भाग लेते हैं। अतः यह एक सामूहिक गतिविधि बन जाती है। सभी प्रकार की कीर्तन परंपराओं का उद्देश्य भगवान के प्रति भक्ति और सामाजिक जागरूकता पैदा करना है। हर कीर्तन परंपरा किसी विशेष दर्शन का पालन करती है जिसके आधार पर कीर्तनकार सांसारिक और आध्यात्मिक पूर्ति के लिए मार्गदर्शन करते हैं। प्रत्येक प्रकार की कीर्तन परंपरा के अपने संत, मंत्र (मंत्र) आराध्य देवता, कीर्तन प्रदर्शन की शैली और कीर्तनकार की पोशाक होती है। वारकरी परंपरा की एकता को माथे पर चंदन का लेप चिह्न (गोपीचंदनमुद्रा) लगाने, गर्दन में तुलसी का धागा लगाने, प्रतिदिन हरिपाठ पढ़ने और पंढरपूर-आळंदी की नियमित तीर्थयात्रा (वारी) करने से बनाए रखा जाता है। वारकरी कीर्तन में मौखिक परंपरा प्रचलित है। केवल ज्ञानेश्वर और निळोबा के बीच की अवधि के भक्ति गीतों (अभंग) को वारकरी कीर्तन में वर्णन (निरूपण) के लिए लिया जाता है। आह्वान (नमन) के पहले भाग (पूर्व रंग) और बाद के भाग (उत्तर रंग) के अंश हैं। लेकिन बाद के भाग में कोई कथा-कथन (अख्यान) नहीं होता है, इसके बजाय, संतों द्वारा लिखे गए किसी भी अभंग पर भाष्य किया जाता है। जहाँ तक इसके प्रदर्शन स्थल का संबंध है, वारकरी कीर्तन केवल मंदिरों तक ही सीमित नहीं है। इसे वहां प्रस्तुत किया जा सकता है जहां लोग इसे सुनने के लिए एक साथ आ सकते हैं। पुराने दिनों में, यह नदी की रेगिस्तानी भूमि में आयोजित किया जाता था। संगीत वाद्ययंत्र वीणा वारकरी कीर्तन का अविभाज्य अंग है और इसे संपूर्ण कीर्तन के साथ बजाया जाता है।

वारकरी कीर्तन में लोक जीवन की संगीतमय रूप से सीधी और संस्कृत जैसी संगीत रचनाएँ पाई जाती हैं। अभंग, आरती, भूपाळी, पोवाडा आदि कविताएँ हैं। वारकरी कीर्तन का संगीत भक्ति संगीत और लोक संगीत के करीब है। वारकरी कीर्तन एक स्वर-आधारित गायन नहीं है बल्कि एक शब्द-आधारित गायन है। यह भाव और सामूहिक गायन को महत्व देता है। वारकरी कीर्तन के विषय-देविका के पात्र, भक्ति, ज्ञान, अनासक्ति, गुरुकृपा, नामकरण वारकरी कीर्तन के विषय हैं। वारकरी कीर्तन का संगीत-वारकरी कीर्तन करने वाले कीर्तनकार अभंग को खुद संगीतबध्द कर गाते हैं। यह धुनें सरल होती हैं ताकि सभी  श्रोताओं का इसमें सहभाग हो।

**वारकरी कीर्तन प्रारूप**

- कीर्तन का प्रारंभिक भाग (अर्थ)
- मंगलाचरण
- कीर्तन का अभंग
- परिचय
- विषय परिचय
- कीर्तन का उत्तर भाग
- अभंग की भूमिका
- शास्त्रीय विवेचन
- मिलनी
- समारोप

मंगलाचरण में जय जय राम कृष्ण हरि यह भजन बहुत ही भावनात्मक और गंभीर आवाज में गाया जाता है। यह वारकरी का महामंत्र है। वारकरी कीर्तन, मंगलाचरण, कीर्तन का अभंग, प्रस्तावना तथा संपूर्ण अभंग का परिचय और अर्थ दिया गया है, और उत्तरी भाग में अभंग की भूमिका, पहले श्लोक का आगे विस्तार, अन्य अंतरों मे ं उल्लेखित महत्वपूर्ण विषयों का वर्णन, शास्त्रीय भाग, मिळवणी तथा समारोप का समावेश होता है। अंत में, संपूर्ण अभंगों पर टिप्पणी करने के बाद, पद पर आकर माऊली का भजन लेते है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

## कीर्तन के विषय

कीर्तन में संतों के जीवन-रेखाचित्र, गीत, अभंग, ओवी, श्लोक, पंतकवी की आर्या, खटाव, फटके के साथ-साथ लोक संगीत के भारूड, अंजनीगीत, गवळण आदि का प्रयोग किया जाता है। कीर्तन में परंपरा के संतों के ही साहित्य का उपयोग किर्तन में किया जाता है जिसका पालन कीर्तनकार द्वारा किया जाता है। चूंकि कीर्तन का मूल उद्देश्य समाज में चेतना जगाना है, इसलिए सामाजिक मुद्दों से संबंधित साहित्य का उपयोग भी किया जाता है। जब कीर्तनकार रामायण, महाभारत, अष्टादश पुराणों की कहानियोंकी घटनाओं के साथ अपनी प्रस्तुति को सजाता है, स्फुट श्लोक, आरती, ललित, गोंधळ, गीत (पद) सुभाषित, भूपाळी का उपयोग करता है, एक प्रवाहित भाषा में संबंधित आधुनिक सामाजिक मुद्दों पर नकल, चुटकुले और टिप्पणियां जोड़ता है, तो श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।

## वारकरी संप्रदाय

महाराष्ट्र में वैदिक धर्म के तहत कई संप्रदायों में से, यह संप्रदाय या संप्रदायों में से एक है जिसका प्रचार तथा प्रसार महाराष्ट्र के सभी भागोंमें हुआ है। इसे वारकरी संप्रदाय भी कहा जाता है। इस संप्रदाय के भक्तों के मुख्य देवता पंढरपुर के श्री पांडुरंग हैं, जो भीमा नदी के तट पर स्थित एक स्थान है। चूंकि वे नियमित रूप से श्री पांडुरंग का दर्शन करने जाते हैं, इसलिए उन्हें वारकरी कहा जाता है, जिसका अर्थ है तीर्थयात्रा करने वाला। मूल शब्द वारीकरी है और ऐसा माना जाता है कि वारकरी इसका परिष्कृत रूप है। ऐसी व्यक्ति अथवा संप्रदाय, जो बार-बार पंढरपुर की यात्रा करता है। वारकरी संप्रदाय के भक्त नियमित रूप से आषाढी, कार्तिकी, माघी या चैत्र की किसी भी शुद्ध एकादशी पर गले में तुलसीमाला पहनकर पंढरपुर जाते हैं। ऐसे वारकरी पांडुरंग का दर्शन लेने के लिए देश भर से और महाराष्ट्र के हर कोने से लाखों की संख्या में पंढरपूर आते हैं। इस संप्रदाय को माळकारी संप्रदाय या भागवत धर्म भी कहा जाता है। यह नाम वारकरियों द्वारा पहनी जाने वाली तुलसी की माला से दिया गया है। इस संप्रदाय में तुलसी माला पहननेका बहुत महत्व है। इसका कारण यह है कि वारकरी विट्ठल के उपासक हैं और विट्ठल श्री कृष्ण का बाल रूप है। चूंकि वारकरी विट्ठल के भक्त हैं, यानी कृष्ण के भक्त, तुलसी माला, जो श्री कृष्ण को प्रिय है, उन्हें भी प्रिय है। और वे इसे अपने पूरे जीवन में अपने पूजनीय देवता के प्रति अपने प्रेम के प्रतीक के रूप में पहनते हैं। यही कारण है कि इस संप्रदाय को माळकरी संप्रदाय भी कहा जाता है। इस माला में 108 मणि हैं और बीच में मेरु मणि है। मुद्रा लगाना और भगवा झंडा पहनना भी वारकरियों के बाहरी संकेत हैं। चूंकि यह एक वैष्णव संप्रदाय है, इसलिए श्रीमद् व्यास द्वारा लिखित भागवत ग्रंथ इस संप्रदाय द्वारा पूजनीय है, इसलिए इस संप्रदाय को भागवत संप्रदाय भी कहा जाता है।

वारकरी संप्रदाय में नाथ भागवत और चतुष्लोकी भागवत इन ग्रंथों को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। स्मरण, हरिकीर्तन, गुरुकृपा, सर्वात्मभाव और आत्मसमर्पण जैसे गुणों और प्रथाओं को अपनानेवाला व्यक्ति वारकरी बन जाता है। वारकरी अद्वैत है। इस संप्रदाय में उच्च और निम्न, छोटे और महान के बीच कोई भेदभाव नहीं है। प्रत्येक वारकरी के लिए यह आवश्यक माना जाता है कि वह अपने पूरे जीवन में किसी न किसी सात्विक यमनियम का ईमानदारी से पालन करें।

1. बारह महीनों में शुद्ध और वद्य एकादशी का उपवास, 2. नियमित रूप से पंढरपूर और आळंदी की वारी करना, 3. प्रतिदिन रामकृष्णहरी मंत्र का जप, 4. ज्ञानदेवजी के हरिपाठ का दैनिक उच्चारण, 5. शाकाहारी, गुणी और सत्यवादी होना 6. लगातार कीर्तन और भजन आदि के माध्यम से भगवान की पूजा करते रहना। वारकरी संप्रदाय में कीर्तन की पारंपरिक विधि दशमी पर कीर्तन और दिंडीजागर, एकादशी पर कीर्तन और हरिजागर और द्वादशी पर श्रीपति का कीर्तन है। वारकरी संप्रदाय में दहीकला का तरीका बहुत अनूठा है। आषाढ़ी कार्तिकी की वारी और वारी का समारोह दहीकला के साथ समाप्त होता है। वारकरी लोकाचार एक ऐसा लोकाचार है जो समाज के विभिन्न वर्गों के बीच पूर्ण सदभाव पैदा करता है। वारकरी संप्रदाय में दिंडी और फड का बहुत महत्व है। दिंडी एक छोटे से भजनी समूह का नाम है जबकि फड एक संत महंत के शिष्यों का बड़ा समुदाय है। वारकरी संप्रदाय के इतिहास में प्रमुख अवधियों का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है।

1. प्रारंभिक अवधि - श्री ज्ञानदेव से पहले की अवधि

2. श्री ज्ञानदेव और नामदेव की अवधि

3. श्री भानुदास और एकनाथ का काल

4. श्री तुकोबा और निलोबा की अवधि

5. उसके तीन सौ साल बाद की अवधि

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

संत बहिणबाई ने निम्नलिखित अभंग में वारकरी संप्रदाय के विकास के इतिहास का बहुत खूबसूरती से वर्णन किया है।

ज्ञानदेवे रचिला पाया। रचियेलें देवालया।। नामा तयाचा किंकर। ते. केला हा विस्तार।।

जनार्दन ,कानाथ। ध्वज उभारिला भावत।। भजन करा सावका। तुका झालासे कळस।। तु-म- 4198

महाराष्ट्र में वारकरी संप्रदाय की नींव को मजबूत करने का श्रेय ज्ञानदेव को जाता है, जबकि सोपानदेव के शिष्य नामदेव ने वारकरी भजन कीर्तन का मार्ग स्थापित किया और पंढरीनाथ को पंजाब के घुमन गांव में लोकप्रिय बनाया। श्री ज्ञानेश्वर महाराज ने मराठी में ओवी की शुरुआत की, और नामदेव राय ने ओवी के थोड़े बदलाव के साथ अभंग की शुरुआत की। महाराष्ट्र में कीर्तन भक्ति को लोकप्रिय बनाने का मुख्य श्रेय शिंपी भक्त नामदेव राय को जाता है। वारकरी कीर्तन के प्रमुख संत श्री निवृति, ज्ञानदेव, सोपानदेव, मुक्तबाई, चांगदेव, विसोबा खेचर, (ब्राह्मण) नामदेव (शिम्पी) नरहरि सोनार (सोनार) सावता माळी (माली) जनाबाई (नामदेव की नौकरानी) गोरोबा (कुम्हार) राका, वांका, चोखामेळा (महार) रोहिदास (चम्हार) आदि थे। वारकरी संप्रदाय के श्री एकनाथ महाराज ने कीर्तन के माध्यम से भक्ति को अत्याधिक लोकप्रिय बनाया। वे प्रतिदिन कीर्तन करते थे। नाथ द्वारा निर्धारित कीर्तन की रूपरेखा भी वारकरी कीर्तन की रूपरेखा बन गई। ज्ञानदेव की ज्ञानेश्वरी, एकनाथ का भागवत और तुकाराम की गाथा को वारकरी संप्रदाय की प्रस्थान त्रयी माना जाता है। इस संप्रदाय में संतों का बहुत सम्मान किया जाता है। ज्ञानदेव और एकनाथ के हरिपाठ का नियमित पठन वारकरी संप्रदाय की एक और विशेष विशेषता है। इस संप्रदाय में एकादशी का व्रत नियमित रूप से मनाया जाता है।

हालांकि महाराष्ट्र[a] में वारकरी कीर्तन और नारदीय कीर्तन यह कीर्तन के दो प्रमुख कीर्तन प्रकार मानें जातें हैं, लेकिन यहां कुछ अन्य प्रकार भी प्रचार में हैं जो प्रस्तुत करने की शैली में समान हैं, लेकिन इन कीर्तनों की विषयवस्तु भिन्न होती हैं। रामदासी कीर्तन, दत्त समप्रदयी कीर्तन, राष्ट्रीय कीर्तन, गडगेबाबा का सामाजिक कीर्तन, सरकारी कीर्तन, कॉरपोरेट कीर्तन आदि कीर्तन के प्रकार आज महाराष्ट्र में लोकप्रिय हैं।

## नारदीय तथा वारकरी कीर्तन का तुलनात्मक अध्ययन

नारदीय कीर्तन का नाम ऋषि नारद के साथ जुड़ा है, जिन्हें संगीत और भक्ति के प्रतीक के रूप में माना जाता है। इस कीर्तन की जड़ें वैदिक परंपरा में हैं, जहाँ भगवान की महिमा गायन के माध्यम से की जाती थी। यह परंपरा समय के साथ विकसित हुई और विभिन्न क्षेत्रों में लोकप्रिय हुई। वहीं, वारकरी कीर्तन महाराष्ट्र में वारकरी संप्रदाय के साथ जुड़ा है। संत तुकाराम, ज्ञानेश्वर और नामदेव जैसे संतों ने इसे विकसित किया। यह कीर्तन भगवान विठोबा (विठ्ठल) की भक्ति पर केंद्रित है और इसे संतों की वाणी और अभंगों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

### प्रस्तुति शैली

नारदीय कीर्तन में भजन, कथा और संगीत का मिश्रण होता है। इसे अत्यधिक अनुशासित और औपचारिक शैली में प्रस्तुत किया जाता है। कथा और संगीत के माध्यम से गहन धार्मिक संदेश दिए जाते हैं। वहीं, वारकरी कीर्तन में लोकभाषा और सरलता का प्रयोग होता है। यह अधिक संवादात्मक और सहभागी होता है, जहाँ कीर्तनकार (प्रस्तुतकर्ता) श्रोताओं को कहानी और अभंगों के माध्यम से जोड़ता है।

### संगतकार

वारकरी कीर्तन में मुख्य कीर्तनकार के साथ दाहिनी ओर एक मृदंग और 10-15 टाळ वादक होते हैं, जबकि नारदीय कीर्तन में दाहिनी ओर तबला, बाईं ओर हारमोनियम और झांझ होता है। नारदीय कीर्तन परंपरा के अनुसार, मुख्य कीर्तनकार आह्वान (नमन) तक तंबुरी को पकड़ता/बजाता है, और कीर्तन के अंत तक बजानेके लिए उसे दूसरे व्यक्ति को सौंप देता है। आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक तंबोरा के उपयोग के कारण इस परंपरा में बदलाव आया है। लेकिन वारकरी कीर्तन आज भी लगातार वीणा के साथ होता है। अधिकांश समय कीर्तनकार के परिवार के सदस्य मुख्य वारकरी कीर्तनकार के साथ होते हैं। इसलिए वे कला और कलाकार से परिचित होते हैं। आजकल पेशेवर संगीतकारों को संगत के लिए बुलाया जाता है, जिसके लिए उनके साथ प्रस्तुति को आकर्षक बनाने के लिए विशेष ध्यान देना पड़ता है। हारमोनियम या ऑर्गन की संगत मुख्य कीर्तनकार की आवाज का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिसमें कभी-कभी संगतकार को गायन के बीच में एकल बजाने का मौका मिलता है। इसलिए हार्मोनियम/ऑर्गन प्लेयर को कीर्तनकार की गायन शैली और सौंदर्यवृध्दि के लिए उपयोग में लाए जानेवाले लय के पॅटर्न से परिचित होना चाहिए।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

**कीर्तन के विषय**

सामाजिक परिवेश में बदलाव के साथ ही कीर्तन के विषय भी बदलते नजर आ रहे हैं। कीर्तन सभी आयु वर्ग के गाँव के लोगों के लिए एक अच्छा मनोरंजन है, जहाँ मनोरंजन का कोई अन्य माध्यम नहीं है। कीर्तन कलाकार मौजूदा परिदृश्य के संदर्भ में विभिन्न सामाजिक मुद्दों को छूता है। इस तरह कीर्तन और इसके कलाकार जागरूक नागरिक के निर्माण में मदद करते हैं। त्योहारों, अनुष्ठानों, धार्मिक समारोहों में कीर्तन कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इसलिए कीर्तन को एक धार्मिक आधार भी मिला है।

**सामाजिक प्रभाव**

नारदीय कीर्तन मुख्यतः धार्मिक और मंदिरों में केंद्रित रहता है, जबकि वारकरी कीर्तन ने सामाजिक सुधार में अहम भूमिका निभाई। वारकरी आंदोलन ने जाति व्यवस्था और सामाजिक असमानताओं को चुनौती दी और भक्ति के माध्यम से समानता का संदेश दिया।

**संगीत और साहित्यिक परंपरा**

नारदीय कीर्तन शास्त्रीय रागों और भजनों पर आधारित होता है, जो आध्यात्मिक गहराई को व्यक्त करते हैं। वारकरी कीर्तन में मराठी अभंग और लोकधुनें प्रमुख हैं, जो सरलता और भावना से भरे होते हैं। नारदीय और वारकरी कीर्तन दोनों ही भारतीय भक्ति परंपरा के महत्वपूर्ण अंग हैं। जहां नारदीय कीर्तन गहरी आध्यात्मिकता और अनुशासन का प्रतीक है, वहीं वारकरी कीर्तन भक्ति के साथ सामाजिक जागरूकता और समानता का संदेश देता है। इन दोनों परंपराओं ने भक्ति संगीत को समृद्ध किया है तथा भारतीय समाज और संस्कृति को गहराई से प्रभावित भी किया है।

## निष्कर्ष

यह तुलनात्मक अध्ययन महाराष्ट्र के नारदीय कीर्तन और वारकरी कीर्तन के बीच सांस्कृतिक, धार्मिक और कलात्मक पहलुओं पर प्रकाश डालता है। दोनों कीर्तन परंपराएं भक्ति आंदोलन का अभिन्न हिस्सा हैं और इनके माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों में अध्यात्मिक संदेश फैलाए गए हैं। दोनों परंपराएं अपनी-अपनी जगह पर भारतीय भक्ति आंदोलन में अनूठा योगदान देती हैं। नारदीय कीर्तन और वारकरी कीर्तन की परंपराओं में समाज और प्रस्तुति की दृष्टि से महत्वपूर्ण अंतर हैं। नारदीय कीर्तन मुख्य रूप से ब्राह्मण समुदाय द्वारा किया जाता था। यह वेदों, उपनिषदों, और पुराणों जैसे प्राचीन धार्मिक ग्रंथों पर आधारित होता था, जिसे ब्राह्मणों द्वारा ज्ञान और शास्त्रीयता के साथ प्रस्तुत किया जाता था। इस कीर्तन में कथा-वाचन और शास्त्रीय संगीत का समावेश होता था। यह परंपरा भारतीय ज्ञान-परंपरा को उजागर करती है और शास्त्रीयता को बढ़ावा देती है। इसके आयोजन की जगह भी विशिष्ट होती थी, जैसे मंदिर या अन्य धार्मिक स्थान, जहां श्रोताओं को धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। यह परंपरा एक निश्चित वर्ग और सामाजिक संरचना के प्रति अधिक केंद्रित थी।

इसके विपरीत, वारकरी कीर्तन सामाजिक समरसता और समावेशिता पर आधारित है। इसमें कोई जातिगत या वर्गीय बंधन नहीं होताय हर कोई इसमें भाग ले सकता है। वारकरी परंपरा का उद्देश्य अधिक सरल भाषा और लोक गीतों के माध्यम से अध्यात्मिक संदेश को आम जनता तक पहुंचाना है। इसे सार्वजनिक स्थलों, गांवों और समुदायों में कहीं भी प्रस्तुत किया जा सकता है, जिससे यह व्यापक रूप से लोकप्रिय है। नारदीय कीर्तन और वारकरी कीर्तन के बीच यह अंतर केवल परंपराओं की शैली में ही नहीं बल्कि उनके सामाजिक दृष्टिकोण और प्रस्तुति के स्थानों में भी देखने को मिलता है। दोनों कीर्तन परंपराएं अपने-अपने स्वरूप में अद्वितीय हैं। नारदीय कीर्तन शास्त्रीय संगीत और वैदिक ज्ञान को महत्व देता है, जबकि वारकरी कीर्तन भक्तिपूर्ण भावनाओं और सामाजिक एकता पर अधिक केंद्रित है।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इन दोनों परंपराओं में धार्मिकता के साथ-साथ समाज सुधार और सांस्कृतिक संरक्षण का भी संदेश निहित है। यह परंपराएं आज भी महाराष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखती हैं और नई पीढ़ी को धर्म और संस्कृति से जोड़ने का कार्य करती हैं। इनकी अनूठी विशेषताएं इन्हें भारतीय भक्ति साहित्य और संगीत का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाती हैं।

## संदर्भ

१. लोहटे, गजानन, संगीत के परिवेश में भजन संप्रदाय की सांप्रदायिक विभिन्नता, अथर्व पब्लिकेशन्स, जळगांव, महाराष्ट्र,
२. साक्षात्कार ह.भ.प. चारूदत्तबुवा आफळे, नारदीय कीर्तनकार, पुणे
३. साक्षात्कार, ह.भ.प. श्री. निंबराज महाराज जाधव, श्री क्षेत्र आळंदी
४. उपाध्ये सुरेश, संपादक, कीर्तन सुगंध, अमृत महोत्सवी वर्ष विशेषांक, 2015
५. होनमाने, डॉ. धनंजय, तंजावरची मराठी कीर्तन परंपरा, स्नेहवर्धन प्रकाशन, 2018